12 धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब

उन्मुखीकरण

विधाता द्वारा बनायी गयी सृष्टि में अनेक जीव-जंतुओं ने इस संसार में जन्म लिया है। जिसमें पशु-पक्षियों को मानव की तुलना में कुछ विशिष्ट प्राकृतिक गुण प्राप्त हुए हैं। पक्षियों को मुक्त आकाश में विचरण करते देख कर हम यही सोचेंगे कि काश हम भी उनकी तरह आकाश में ऊँची उड़ान भर पाते। इसी आकांक्षा ने विलबर राइट व ओरोविन राइट भाइयों को हवाई जहाज़ की खोज की प्रेरणा दी और उन्होंने आकाश में उड़नेवाले हवाई जहाज़ का आविष्कार किया।

प्रश्न

1. हवाई जहाज़ का आविष्कार किसने किया?
2. उड़ते हवाई जहाज़ को देखकर आपको क्या लगता है? क्यों?
3. पशु-पक्षी और मानव गुणों में क्या अंतर है?

उद्देश्य

देश की सुरक्षा का कार्य अत्यंत महान कार्य है। इसके लिए अनेक प्रकार के नवीन तथा वैज्ञानिक उपकरण अपना विशेष दायित्व निभाते हैं। उन्हीं में कृत्रिम उपग्रह, रॉकेट, मिज़ाइल तथा रासायनिक वायु आदि का आविष्कार हुआ है। इस पाठ के द्वारा छात्रों में देश की सुरक्षा की भावना जागृत कराना और उपकरणों का आविष्कार करने वाले वैज्ञानिकों की जानकारी देना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

प्रत्यक्ष रूप से प्रश्नोत्तर द्वारा की जाने वाली प्रक्रिया ही साक्षात्कार है। इस पाठ में साक्षात्कार विधा का परिचय दिया गया है। जिसमें भारत के पूर्व राष्ट्रपति मिज़ाइल मैन मान्य अब्दुल कलाम जी का साक्षात्कार, जो कि कुछ छात्रों ने लिया था और टेसी थॉमस, मिज़ाइल वुमन द्वारा इंडिया टुडे साप्ताहिक पत्रिका को दिया गया साक्षात्कार-यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *''आज हमारे यहाँ जब भी अंतरिक्ष विज्ञान और मिज़ाइल की बात की जाती है, तो सभी के मस्तिष्क में एक ही नाम गूँजता है- 'ए.पी.जे. अब्दुल कलाम'। सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं। उन्होंने दुनिया के मानचित्र में भारत को जो स्थान दिलाया है, उसके लिए भारतवासी उनके ऋणी हैं। मैं गर्व के साथ कहना चाहती हूँ कि वे मेरे गुरु हैं।'' इतने सुंदर विचार रखने वाली भारत की प्रथम 'मिज़ाइल वुमन' शिष्या टेसी थॉमस और उनके गुरु ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के बारे में जानने के लिए आगे पढ़ें...*

तमिलनाडु के रामेश्वरम की गलियों में समाचार पत्र बेचने वाला एक निर्धन बालक एक दिन सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा भारत का राष्ट्रपति बनेगा, ऐसा किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था। किंतु उस ग़रीब बालक ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम और लगन से यह सिद्ध कर दिखाया कि मनुष्य के लिए विश्व में कुछ भी असंभव नहीं है। मन में अगर चाह हो तो उसे राह अपने आप मिल जाती है। जी हाँ, यह बालक कोई और नहीं बल्कि हमारे पूर्व राष्ट्रपति और मिज़ाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध ''भारत रत्न'' अबुल फ़कीर जैनुलाबुद्दीन अब्दुल कलाम हैं।

राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान कुछ बालकों ने उनका साक्षात्कार लिया था। प्रस्तुत हैं उसी की कुछ झलकियाँ-

बालक : बढ़ती जनसंख्या और अन्य कई प्रकार की सामाजिक समस्याएँ हैं, जो हमारे देश में किसी महामारी की तरह फैली हुई हैं। उनके बारे में जागरूकता लाने के लिए हम छात्र क्या कर सकते हैं?

अब्दुल कलाम : इसमें दो राय नहीं कि हमारे देश के सामने बढ़ती जनसंख्या और अन्य कई सामाजिक समस्याएँ हैं। पर साथ ही हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि पूरे विश्व में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जहाँ 50 प्रतिशत से भी अधिक युवाशक्ति है। जो देश के आर्थिक विकास में प्रमुख योगदान दे रही है। यह भी देखने में आया है कि जहाँ कहीं भी महिला साक्षरता दर अधिक है, वहाँ यह साक्षरता दर बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रित करने में कारगर साबित हुई है। एक छात्र होने के नाते आप सब कम से कम पाँच महिलाओं को शिक्षित करें, जो पढ़ना-लिखना नहीं जानतीं। साथ ही आप उन्हें समाज की उन प्रमुख समस्याओं के बारे में भी बतायें, जिनसे आजकल की महिलाओं को संकट का सामना करना पड़ रहा है।

बालक : भारत के राष्ट्रपति के रूप में आप बाल मज़दूरी की समस्या को समाप्त करने के लिए क्या सुझाव देना चाहेंगे?

अब्दुल कलाम : क़ानूनन बाल मज़दूरी करवाना एक अपराध है। इस दशक के अंत तक हमें इसे जड़ से समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए। भारतीय संसद ने भी संविधान

संशोधन अधिनियम 2002 के माध्यम से 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा पाने के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में घोषित कर दिया गया है। यह बहुत ज़रूरी है कि बच्चे अभिभावकों को नशाख़ोरी से मुक्ति दिलाने के लिए मुहिम चलायें और प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से उन्हें शिक्षित करने की व्यवस्था भी करें। ऐसी समस्या से तीन अलग-अलग उपायों से निपटा जा सकता है- (क) बच्चा स्वयं अपनी पढ़ाई जारी रखने में रुचि दिखायें। (ख) माता-पिता को शिक्षित करके और (ग) बच्चों से काम लेने वाले मालिकों में आत्म-नियंत्रण की प्रवृत्ति का विकास करके, ताकि वे उन बच्चों को अपने बच्चे जैसा ही समझें।

बालक : वर्तमान में भ्रष्टाचार सार्वजनिक जीवन में लगभग सभी स्तरों पर व्याप्त है। छात्र समुदाय सन् 2020 तक भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने के लिए क्या-क्या कर सकता है?

अब्दुल कलाम : सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए व्यापक आंदोलन की आवश्यकता है। यह आंदोलन अपने घर और विद्यालय से ही आरंभ करना होगा। भ्रष्टाचार उन्मूलन में मेरी दृष्टि में केवल तीन ही तरह के लोग सहायक सिद्ध हो सकते हैं। वे हैं- (क) माता, (ख) पिता और (ग) प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक। यदि ये तीनों बच्चों को ईमानदारी और सच्चाई का पाठ पढ़ाते हैं तो इसके बाद जीवन में शायद ही कोई उनको हिला पाएगा। अतः हर घर में इस तरह के आंदोलन की आवश्यकता है, सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार को मिटा सकें। आप सब यह संकल्प लें कि आप सदैव ईमानदार एवं भ्रष्टाचारमुक्त जीवन का निर्वाह करेंगे और दूसरों के लिए आदर्शवान बने रहेंगे।

बालक : बड़े हमेशा बच्चों को कुछ न कुछ उपदेश देते रहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि अनुशासित रहना चाहिए, कुछ लोग कहते हैं खूब पढ़ाई करनी चाहिए, तो कुछ लोग कहते हैं कि ईमानदार बनना चाहिए, कड़ी मेहनत करनी चाहिए आदि। वैसे तो इन बातों का पालन करना महत्वपूर्ण है, किंतु एक छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण गुण क्या है?

अब्दुल कलाम : एक छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण है- उसकी अपने प्रति ईमानदारी और दूसरों के प्रति आदर का गुण। ये गुण आपको निस्संदेह आदर्श नागरिक बनायेंगे।

छात्र : एक अंतिम प्रश्न। एक छात्र के रूप में मैं विकसित भारत के आपके स्वप्न को साकार करने की दिशा में क्या कर सकता हूँ?

अब्दुल कलाम : एक छात्र होने के नाते, आप जिस कक्षा में भी पढ़ते हो, उसमें आगे बढ़ने के लिए ख़ूब परिश्रम करें। अपने जीवन में पहले एक लक्ष्य बनायें। फिर उसे प्राप्त करने के लिए आवश्यक ज्ञान और अनुभव प्राप्त करें। बाधाओं से लड़ते हुए उन पर विजय प्राप्त करें। निरंतर प्रयत्नशील रहते हुए सबसे बढ़िया काम करने की ओर बढ़ते रहें। साथ ही नैतिक मूल्यों को भी ग्रहण करें। छात्रों को हमेशा परिश्रमी

बनने का प्रयास करना चाहिए। छुट्टी के दिनों में छात्र ग़रीब और सुविधाओं से वंचित बच्चों को पढ़ाने का काम करें और इसे अपने जीवन में एक उद्देश्य के रूप में लें। छात्र अधिक से अधिक पौधे लगायें। इससे पर्यावरण को संतुलित बने रहने में सहायता मिलेगी। हमारे ये कार्य न केवल हमको, बल्कि हमारे राष्ट्र को भी विकास और समृद्धि के पथ पर ले जायेंगे।

(साभारः हम होंगे कामयाब, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम)

1. निरक्षरों को साक्षर बनाने के लिए सरकार द्वारा क्या-क्या क़दम उठाये जा रहे हैं?
2. एक छात्र में कौन-कौन से महत्वपूर्ण गुण होने चाहिए?
3. एक छात्र के रूप में विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए हमें क्या-क्या करना चाहिए?
4. भारत को भ्रष्टाचार से मुक्त कराने में छात्रों का क्या योगदान हो सकता है?

बड़ी मुश्किल से मुझे टेसी थॉमस का साक्षात्कार करने का मौक़ा मिला था। मैं सुबह-सुबह ही हैदराबाद के डिफेंस क्वार्टर्स में स्थित उनके घर पहुँच गयी। जैसे ही घर की घंटी बजायी, ज़रीदार साड़ी में भारतीय सांस्कृतिक छाप लिये टेसी जी ने मेरा मुस्कुराकर स्वागत किया। मैं पहली ही नज़र में उनकी सादगी की प्रशंसक बन गयी।

घर में देखा तो पुरस्कारों और सम्मानों का भंडार पड़ा है। किंतु इसमें भी विशेष था 'हाथी वाला स्मारक' जो उन्हें उनके इंजीनियरिंग की पढ़ाई के समय कॉलेज की ओर से दिया गया है। उनकी शिक्षा-दीक्षा केरल स्थित अलप्पुझा में हुई। यहीं पर उनका जन्म हुआ था। रक्षा अनुसंधान और विज्ञान को पुरुषों का क्षेत्र माना जाता था। मगर टेसी थॉमस ने अपनी मेहनत, लगन और दृढ़-निश्चय से पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्र में सफलता के नये शिखर तय किये हैं। थॉमस रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ) के अग्नि-5 कार्यक्रम की निदेशक बनीं। उन्होंने देश के किसी मिज़ाइल प्रॉजेक्ट की पहली महिला प्रमुख बनने का गौरव प्राप्त किया। चलिए उन्हीं से उनके बारे में जानते हैं।

साक्षात्कारकर्ता - आप अपने आरंभिक जीवन के बारे में क्या बता सकती हैं?

टेसी थॉमस - मुझे बचपन से ही कुछ अलग करने की चाह थी। मैं अंतरिक्ष के सपने देखती थी। यही कारण रहा कि मैंने गणित और विज्ञान विषय को अपने तन-मन में बसा लिया। इसमें मेरी पाठशाला (अलप्पुझा) और अध्यापकों का बहुत बड़ा योगदान रहा। अध्यापकों के सहयोग और सच्ची लगन से सफलता की बुलंदियों को प्राप्त किया जा सकता है।

साक्षात्कारकर्ता - जब कभी कोई आपको भारत की 'प्रथम मिज़ाइल वुमन' और 'अग्नि-पुत्री' कहते हैं, तो आपको कैसा लगता है?

टेसी थॉमस - मुझे बेहद खुशी होती है। मेरे पास बयान करने के लिए कोई शब्द नहीं है। सन् 1985 में डी.आर.डी.ओ द्वारा देशभर के दस युवा वैज्ञानिकों को चुना गया उसमें मेरा नाम भी था। उस दिन मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। मानो मेरे सपनों को पंख मिल गये थे। मैंने 'अग्नि मिज़ाइल' के अभियान से जुड़कर जो आनंद प्राप्त किया,वह सदा याद रहेगा।

साक्षात्कारकर्ता - आप अपना आदर्श किसे मानती हैं?

टेसी थॉमस - आज हमारे यहाँ जब भी अंतरिक्ष विज्ञान और मिज़ाइल की बात की जाती है, तो सभी के मस्तिष्क में एक ही नाम गूँजता है- 'ए.पी.जे. अब्दुल कलाम'। सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं। उन्होंने दुनिया के मानचित्र में भारत को जो स्थान दिलाया है, उसके लिए भारतवासी उनके ऋणी हैं। मैं गर्व के साथ कहना चाहती हूँ कि वे मेरे गुरु हैं। (डी.आर.डी.ओ में टेसी थॉमस, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के नेतृत्व में काम कर चुकी हैं।) उन्होंने ही मुझे प्रेरणा के 'अग्नि पंख' दिये हैं। वे महान थे, महान हैं और महान रहेंगे। उनकी नेतृत्व क्षमता बेमिसाल है। उन्हें मैं अपना आदर्श मानने में गर्व अनुभव करती हूँ।

साक्षात्कारकर्ता - बच्चों को आप क्या सुझाव देना चाहती हैं?

टेसी थॉमस - बच्चों से मैं यही कहना चाहती हूँ कि वे जो भी पढ़ें ध्यान से पढ़ें, मेहनत करें और लक्ष्य प्राप्त करने तक रुके नहीं। जो उन्हें पसंद हैं उसमें अपना जी-जान लगा दें। कमर कसकर तैयारी करें। सफलता अवश्य उनके क़दम चूमेगी।

5. बच्चों के लिए टेसी थॉमस का संदेश क्या है?

6. टेसी थॉमस को 'अग्नि-पुत्री' का उपनाम क्यों दिया गया होगा?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे कुछ और महापुरुषों के नाम बताइए।
2. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और टेसी थॉमस में आपको सबसे अच्छी बात कौनसी लगी और क्यों?

(आ) पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

1. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का साक्षात्कार किसने लिया?
2. टेसी थॉमस का साक्षात्कार किसने लिया?
3. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने बाल मज़दूरी को समाप्त करने के लिए क्या उपाय बताये?
4. टेसी थॉमस की स्कूली पढ़ाई कहाँ हुई? उन्हें किन विषयों में रुचि थी?

(इ) निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

1. सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए व्यापक आंदोलन की आवश्यकता है।
2. सच्चे अर्थों में वे देश के ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के आदर्श हैं।

(ई) गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

विज्ञान की भी एक भाषा होती है। यदि आप ध्यान से देखें तो आपको पता चलेगा कि किस तरह ऋतुएँ बदलती रहती हैं। किस तरह किसी बीज से नन्हा पौधा निकलता है। किस तरह पानी पर कागज़ की नावें तैरती हैं। किस तरह पक्षी उड़ते हैं। किस तरह तितली फूल का रस पीती है। किस तरह गुब्बारा हवा से फूलता है। चारों ओर विज्ञान ही विज्ञान है। विज्ञान किताबों में कम आपकी समझ में ज़्यादा बसता है। इसीलिए कुछ

जानने की इच्छा हमेशा रहनी चाहिए। जो जानने की इच्छा नहीं रखता वह किताबें पढ़कर भी कुछ नहीं सीख सकता।

1. विज्ञान कैसा विषय है?
2. विज्ञान के कुछ उदाहरण दीजिए।
3. जानने की इच्छा न हो तो क्या होगा?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. कलाम के विचार में ''आदर्श छात्र'' के गुण क्या हैं?
2. टेसी थॉमस के जीवन से हमें क्या संदेश मिलता है?

(आ) इन प्रश्नों के उत्तर आठ-दस पंक्तियों में लिखिए।

1. अच्छे नागरिक बनने के लिए कौन से गुण होने चाहिए?
2. टेसी थॉमस अब्दुल कलाम को अपना आदर्श मानती हैं। क्यों?

(इ) किसी एक साक्षात्कार को उचित शीर्षक देते हुए निबंध के रूप में लिखिए।

(ई) ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के विचार आदर्श योग्य हैं। इन विचारों को अमल में लाने के लिए आप क्या करेंगे?

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. प्रतिभा, परिश्रम, छात्र, शिक्षा (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए। पर्याय शब्द लिखिए।)
2. संभव, ज्ञान, बढ़िया, साकार (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. छात्रा, छुट्टी, पौधा, बात (एक-एक शब्द का वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए। उसके अनुसार कीजिए।

1. निर्धन, संकल्प (संधि विच्छेद कीजिए।)
2. सुबह-शाम, युवाशक्ति (समास पहचानिए।)

(इ) रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए और इन्हें समझिए।

1. राष्ट्रपति <u>कार्यकाल</u> के दौरान <u>कुछ</u> बालकों ने <u>उनका</u> साक्षात्कार लिया था।
2. <u>निरंतर</u> प्रयत्नशील रहते हुए सबसे <u>बढ़िया</u> काम करने <u>की ओर</u> बढ़ते रहें।

(ई) रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिये गये शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

एक <u>छात्र</u> होने के नाते आप जिस <u>कक्षा</u> में भी पढ़ते हों, उसमें आगे बढ़ने के लिए खूब परिश्रम करें।

(नागरिक-देश, खिलाड़ी-खेल, कलाकार-कला, अध्यापक-विषय, परीक्षार्थी-परीक्षा)

परियोजना कार्य

छठवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक की हिंदी पाठ्यपुस्तकों के मुखपृष्ठों में (कवर पेज) आपको कौनसा मुखपृष्ठ बहुत अच्छा लगता है? उसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए एक सूची बनाइए और उसका कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।

उपवाचक

अनोखा उपाय

- डॉ. रावूरि भरद्वाज

कई साल पहले की बात है। एक राज्य था। जिसका नाम हरितनगर था। हरितनगर का राजा कुमारवर्मा था। वह एक अच्छा शासक था। कुमारवर्मा के शासन काल में राज्य हरा-भरा रहता था। लेकिन एक समय ऐसा आया, राज्य में सारी फ़सलें सूख गयीं। तालाब, गड्ढे सूख गये। केवल दो ही जीव नदियाँ बची थीं। जो छोटी-छोटी नहरें बनकर रह गयीं।

राज्य में पशुओं का चारा भी मिलना मुश्किल हो गया। कई किसान अपने-अपने पालतू जानवर सस्ते दामों पर बेचने लगे। ऐसी हालत में राजभंडार का अनाज प्रजा में बाँट दिया जाने लगा। अड़ोस-पड़ोस के राज्यों से अनाज उधार लिया जाने लगा। फिर भी राजा को भविष्य की चिंता सता रही थी। राजा उत्पन्न परिस्थितियों के बारे में गंभीर रूप से सोचने लगा लेकिन इसका कोई पता नहीं चला। राजा के मन में ये सवाल उठ रहे थे कि अड़ोस-पड़ोस के सभी राज्य हरे-भरे हैं। वहाँ की प्रजा भी सुखी है। लेकिन न जाने इस राज्य में ऐसा क्यों हो रहा होगा...? क्या कारण हो सकते हैं...? इस समस्या का हल कैसे किया जा सकता है?

राजा कुमारवर्मा ने इस समस्या के हल की चर्चा के लिए कई बुद्धिमानों, हाज़िरजवाबदारों और विद्वानों को बुलवाया। चर्चा में कुछ बुद्धिमानों ने बताया- ''हे महाराज! भूलें कई तरह की होती हैं। कुछ भूलें सरलता से पहचानी जाती हैं तो कुछ पहचानी नहीं जातीं।'' कुछ हाज़िरजवाबदारों ने बताया- ''हे राजन! कुछ भूलों का आभास होता है और कुछ का आभास तक नहीं होता।'' कुछ विद्वानों ने बताया- ''हे प्रभु! कुछ भूलें सुधार के रूप में हो जाती हैं तो कुछ सुधार भी भूलों के रूप में बदल जाते हैं। ऐसी ही कोई जानी-अनजानी बात छिपी होगी जिससे आज राज्य में यह समस्या उत्पन्न हुई है।''

राजा कुमारवर्मा ने पूछा- ''अब आप ही बतायें कि मुझे क्या करना चाहिए?''

सभी ने विचार-विमर्श कर राजा को यह सलाह दी- ''सभी तरह से खुशहाल किसी राज्य के राजा से भेंट करें। वहाँ के शासन नियमों का पता लगायें। यहाँ के शासन नियमों में सुधार करें। इससे राज्य की समस्या का हल अवश्य हो सकता है।''

राजा कुमारवर्मा को यह उपाय अच्छा लगा। उसने तुरंत अपने पड़ोसी राज्य के महाराज सत्यसिंह से भेंट करने का निर्णय लिया और सेवकों से संदेश भेजा- ''राजाधिराज, महाराज सत्यसिंह जी को सादर प्रणाम। हमारे राज्य में अकाल से जनता त्रस्त है। इस समस्या के हल के लिए आपकी उचित सलाह व आपके शासन नियमों की जानकारी के लिए हम आपके यहाँ पधारना चाहते हैं। आशा है कि आप हमारा निवेदन स्वीकारें।''

अधर्मी राजा के अत्याचार से प्रजा का नाश हो जाता है। - महात्मा गांधीजी

महाराज सत्यसिंह ने अपने संदेश में लिखा- ''आप और हम पड़ोसी राजा हैं। किसी भी समस्या में एक-दूसरे का हाथ बँटाना हमारा कर्त्तव्य है। हमारे राज्य में आपका हार्दिक स्वागत है। आप हमारे आदरणीय अतिथि हैं। अतिथि के रूप में आपका सत्कार करने का सौभाग्य हमें मिल रहा है, इसके लिए हम कृतज्ञ हैं।''

इस प्रत्युत्तर के पढ़ते ही राजा कुमारवर्मा को अपने राज्य की समस्या का हल करने का कुछ हद तक उपाय मिल ही गया था। फिर भी राजा स्वयं पड़ोसी राज्य के राजा से भेंट करना चाहते थे।

देखते-देखते वह दिन आ ही गया। राजा कुमारवर्मा का पड़ोसी राज्य में भव्य स्वागत हुआ। राज्य देखकर राजा आश्चर्यचकित होने लगे। चारों तरफ जलाशय भरे हुए थे। नदियाँ लबालब थीं। नहरें बह रही थीं। ठंडी हवाएँ सन-सना रही थी। खेत भरी हरियाली से लह-लहा रहे थे। फूलों के चमन खुशबू से महक रहे थे। बाग-बगीचे फल-फूलों से लदे थे। ये सारी चीज़ें देखकर राजा कुमारवर्मा को बेहद खुशी हुई।

महाराज कुमारवर्मा की भेंट महाराज सत्यसिंह से हुई। ''मित्र! आपका राज्य किसी स्वर्ग से कम नहीं है। मुझे लगता है कि जिन शासन नियमों को मैं नहीं जानता, उनका आप पूरा-पूरा पालन कर रहे हैं। इसीलिए आपकी प्रजा सुखी है। मैं भी अपनी प्रजा को सुखी देखना चाहता हूँ। कृपया आप मुझे सुशासन का हितोपदेश दीजिए।''

महाराज सत्यसिंह ने पहले तो हितोपदेश के लिए मना कर दिया। किंतु राजा कुमारवर्मा के अनुरोध पर उन्होंने कहा- ''नहीं महाराज! मुझे मजबूर मत कीजिए। मैं दोषी हूँ। जो दोषी होता है, उसे हितोपदेश करने का कोई अधिकार नहीं होता। मैं आपको एक घटना सुनाता हूँ। मैं एक बार अपने अंगरक्षक के साथ इसी तरह उपवन में चर्चा कर रहा था। तभी मुझे राजमाता के पास ज़रूरी बात करने के लिए जाना पड़ा। मैंने अंगरक्षकों को अपने लौटने तक वहीं खड़े रहने का आदेश दिया था। राजमाता से बात करते-करते रात हो गयी। वहीं पर मैंने भोजन किया। सो गया। अगले दिन सुबह उठकर देखा तो ख़ूब बारिश हो रही थी। सेवकों ने बताया कि देर रात से बारिश हो रही है। जब मैंने उपवन लौटकर देखा तो अंगरक्षक उसी स्थान पर भीगते हुए खड़े हैं। मैं बातचीत में इतना निमग्न हो गया था कि अंगरक्षकों को जाने के लिए भी नहीं कह सका। यह मेरी भूल थी। अतः ऐसी भूल करने वाले राजा को हितोपदेश देने का कोई अधिकार नहीं। मुझे क्षमा कीजिए।''

राजा कुमारवर्मा ने महाराज सत्यसिंह की इस घटना को पूरे ध्यान से सुना। उन्हें लगा कि राजमाता ही उन्हें हितोपदेश दे सकती है। उन्होंने राजमाता के दर्शन किये और अपनी इच्छा बतायी।

''पुत्र! सच कहूँ तो मैं भी दोषी हूँ। एक बार मेरे पुत्र ने अपनी पत्नी के लिए सुंदर ज़ेवर बनवाये। मेरे मन में ज़ेवर के प्रति लालच पैदा हो गया। यदि मैं अपने पुत्र या बहू से ज़ेवर माँगती, तो वे कभी मना नहीं करते। एक राजमाता का ज़ेवरों के प्रति आकर्षण होना दोष है। किसी दूसरे की वस्तु के प्रति लालच

रखना भी ग़लत है। ऐसी भूल करने वाली मैं, हितोपदेश करने के योग्य नहीं समझती।''

राजा कुमारवर्मा आश्चर्य में पड़ गया। बाद में राजगुरु से भेंट की और उनसे उपदेश के लिए निवेदन किया।

तब राजगुरु ने कहा, ''महाराज! मुझे क्षमा कीजिए। मैं इसके योग्य नहीं। एक बार सुदूर देश से एक पंडित आया था। राजदर्शन करना चाहा। उसके पांडित्य की जाँच करने का समय न होने के कारण मैंने राजा को यह कह दिया कि वह बड़ा पंडित है। राजा मुझ पर असीम विश्वास रखते हैं। उन्होंने पंडित को ढेर सारा इनाम दिया। आगे चलकर मुझे पता चला कि वह पंडित केवल औसत था। मेरे आलस के कारण मैं राजा को उचित सलाह न दे सका। ऐसी भूल करने वाला मैं, हितोपदेश के योग्य नहीं समझता।''

राजा कुमारवर्मा बड़ी सोच में पड़ गया।

इन तीन घटनाओं से उसे यह सीख मिली कि हमें छोटी से छोटी भूल भी नहीं करनी चाहिए। यदि हमसे कोई भूल हो तो उसे तुरन्त सुधारलेना चाहिए।

राजा ने इस सीख का पालन किया। कुछ ही दिनों में उसका राज्य खुशहाल बन गया।

(वर्ष 2012 के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित स्वर्गीय श्री रावूरि भरद्वाज तेलुगु के प्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं। प्रस्तुत कहानी तेलुगु भाषा में रचित उनकी प्रसिद्ध रचना 'बंगारु कुंदेलु' की अनूदित रचना 'सोने का खरगोश' से ली गयी है।)

प्रश्न :

1. राजा कुमारवर्मा के राज्य में अकाल की स्थिति क्यों उत्पन्न हुई होगी?
2. अकाल की समस्या के परिष्कार के लिए राजा ने क्या-क्या उपाय सोचे होंगे?
3. राजा कुमारवर्मा की जगह पर यदि तुम होते तो अकाल की समस्या से कैसे जूझते?

शब्दकोश

इस शब्दकोश से आपको इस पुस्तक के पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलेगी। नीचे बाईं ओर कठिन शब्द तथा दाईं ओर उसका अर्थ तेलुगु और अंग्रेजी में दिया गया है। साथ ही साथ वाक्य प्रयोग भी दिया गया है। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे । यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु उनकी सही वर्तनी भी सिखाएगा।

अजीब	=	విచిత్రమైన, amazing	संसार में **अजीब** घटनाएँ घटती हैं।
अमोलक	=	అమూల్యమైన, priceless	प्रकृति एक **अमोलक** धन है।
उन्मूलन	=	నిర్మూలన, abolishment	कुरीतियों का **उन्मूलन** करना चाहिए।
उलझन	=	సమస్య, trouble	साहसी व्यक्ति **उलझन** से नहीं घबराता।
ओजस्वी	=	ఉత్సాహపరిచేలా, energetic	दिनकर जी की कविताएँ **ओजस्वी** होती हैं।
क्रंदन	=	ఏడ్చుట, weaping	अकाल के कारण किसान क्रंदन करने लगे।
कचोट	=	బాధ, pinch	गरीबों के प्रति गाँधीजी के हृदय में **कचोट** रही।
क्लेश	=	కష్టములు, problems	हमें हँसते हुए **क्लेश** का सामना करना चाहिए।
कारगर	=	ప్రయోజనకరమైన, useful	देश में प्रौढ़ शिक्षा **कारगर** सिद्ध हुई।
कुहासा	=	మంచు, fog	सरदी के दिनों में चारों ओर **कुहासा** छा जाता है।
घन	=	మబ్బులు, cloud	मोर **घन** को देखकर नाचने लगे।
जिज्ञासा	=	తెలుసుకోవాలనే కోరిక, curiosity	बालकों में जानने की **जिज्ञासा** होती है।
टापू	=	చిన్న దీవి, Island	दिविसीमा कृष्णा नदी में स्थित एक **टापू** है।
तम	=	చీకటి, darkness	दीपक की रोशनी रात के **तम** को दूर करती है।
तबाही	=	ధ్వంసం, destruction	सुनामी के कारण राज्य में **तबाही** मच गयी।
तथ्य	=	సరియైన, accurate	गांधी जी आजीवन **तथ्य** के मार्ग पर चले।
दादुर	=	కప్ప, frog	वर्षा ऋतु में **दादुर** की टर्र-टर्र सुनायी देती है।

धवल	=	తెల్లని, milky	बर्फ़ से ढके हिमालय **धवल** दिखायी देते हैं।
नफ़रत	=	అసహ్యము, hate	हमें किसी से **नफ़रत** नहीं करनी चाहिए।
नींव	=	పునాది, foundation	नेहरू जी ने नागार्जुन सागर बाँध की **नींव** डाली।
न्यस्त	=	వ్యాపించిన, spread	प्रकृति सुंदरता से **न्यस्त** है।
पावन धाम	=	పవిత్రప్రదేశము, holyplace	विद्यालय एक **पावन धाम** है।
बास	=	సువాసన, fragrance	फूलों में **बास** होती है।
भ्रष्टाचार	=	అవినీతి, corruption	**भ्रष्टाचार** को जड़ से मिटाना चाहिए।
भिश्ती	=	మేస్త్రీ, mason	भिश्ती दीवार बनाता है।
भेंट	=	కానుక, Gift	जन्मदिन के अवसर पर **भेंट** दिये जाते हैं।
मटमैला	=	వెలసిపోయినట్లుగా, fade	कपड़ा **मटमैला** हो गया है।
मूक	=	మౌనము, silent	हमें अन्याय के समय **मूक** नहीं रहना चाहिए।
रज	=	మట్టి, dust	वर्षा का पानी **रज** को बहा ले जाता है।
रौनक़	=	మెరుపు, charm	ईद के दिन चारों ओर **रौनक़** छा जाती है।
वारि	=	నీరు, water	**वारि** ही जीवन का आधार है।
विनीत	=	వినయము, humble	सज्जन **विनीत** होते हैं।
संचित	=	సమకూర్చుట, collect	हमें विद्या धन **संचित** करना चाहिए।
संशोधन	=	సవరణ, amendment	समय-समय पर क़ानून में **संशोधन** हो रहे हैं।
सरित्पति	=	సముద్రము, sea	नदियाँ **सरित्पति** में जाकर मिलती हैं।
साक्षात्कार	=	పరిచయ కార్యక్రమము, interview	छात्रों ने राष्ट्रपति का **साक्षात्कार** लिया।
ह्रास	=	పతనము, destroy	युद्धों से **ह्रास** होता है।

अध्यापकों के लिए सूचना : यहाँ पर शब्दों के अर्थ व उनके वाक्य प्रयोग दिये गये हैं। अतः बच्चों को अर्थ समझाने के लिए और अधिक वाक्य प्रयोग सिखाइए।

छात्रो! आप लोगों ने अब तक कई नीति वाक्य पढ़े हैं। आप स्वयं भी किसी नीति वाक्य का सृजन कर सकते हैं। नीचे दिये गये खाली स्थान में एक नीति वाक्य का सृजन कर अपना नाम लिखिए।